(११) भारतेंदुजी की भाषा और शैली

[ले०—श्री गोपाललाल खन्ना एम० ए०, काशी]

(१)

विषय प्रवेश

पश्चिम की साहित्य समीक्षा ने गद्य और पद्य मे—Prose और oetry मे—बडा अतर मान रखा है। वहाँ गद्य इतना नीरस और अलकार शून्य समझा जाता रहा है कि उसके मत से गद्य म काव्यत्व होता ही नहा। वहाँ पद्य ही काव्य है और वहा काव्य के गुण से सपन्न है। गद्य मे काव्यत्व की कल्पना करना उसके लिये असभव सा प्रतात होता है। यही कारण है कि वहा प्रोज (Prose) शब्द से बना हुआ विशेषण प्रोजयिक (Prosaic) नीरस का पर्याय होता है। पर हमारे यहाँ भारतीय साहित्य शास्त्रियो ने काव्य के अतर्गत गद्य और पद्य दोनों माने हैं। साहित्य शास्त्र मे गद्य काव्य और पद्य काव्य दोनो का उल्लेख मिलता है। गद्य और पद्य दोनो मे काव्य के गुण आ सकते हैं। जिन रचनाओ म काव्य के गुण वर्तमान हों वे सभी काव्य के अतर्गत आ जाता है। अतएव गद्य और पद्य काव्य के दो भेद माने गए हैं।

यद्यपि गद्य और पद्य काव्य के दो अग हैं, तथापि दोनो में भेद है। पद्य वह है जिसमे पद हा, नप तुले चरण हो। ये छदो के नियमानुसार बडे या छोटे हा सकते हैं। भाव के अनुकूल इनमें न्यूनाधिक्य करना रचयिता की इच्छा पर निर्भर नहो रहता। प्रत्येक चरण गण, मात्रा, वर्ण आदि की सख्या से परि